PRIVATE CIRCULATION ONLY

दिव्य ज्योति

नवम्बर 2008 ISSUE 1108 ''मैं संसार की ज्योति हूँ'' न्यूज़ लैटर

अपने दीपक को बुझाने न दीजिए!

"आँख शरीर का दीपक है। यदि तुम्हारी आँख अच्छी है, तो तुम्हारा सारा शरीर प्रकाशमान होगा; किन्तु यदि तुम्हारी आँख बीमार है, तो तुम्हारा सारा शरीर अन्धकारमय होगा। इसलिए जो ज्योति तुम में है, यदि वही अन्धकार है, तो यह कितना घोर अन्धकार होगा!" **(सन्त मत्ती 6:22-23)**– प्रभु येशु ने यह रहस्यमयी बात हमारे शरीर के एक अत्यन्त महत्वपूर्ण अंग के विषय में कही है। वह है हमारी आँख, जिसके बदलाव से एक व्यक्ति के स्वभाव, विचार और कर्म में बदलाव आ सकता है।

जिस प्रकार एक साफ, पारदर्शी, बेरंगी खिड़की से सूर्य की किरणें बिना अपनी दिशा, गर्माहट और तेज बदले एक अन्धकारमय कमरे में पहुँच जाती हैं, उसी तरह स्वस्थ आँखों के द्वारा सारे शरीर में - मन और हृदय में - ईश्वर का सच्चा प्रेम, उसकी दया, उदारता, क्षमा, प्रकाश, प्रतिबिम्ब और तेजस्व पहुँच जाता है और उन्हीं आँखों के द्वारा यह सब गुण बाहर भी झलकते हैं। कुछ लोग शारीरिक रूप से अन्धे हाते हैं तो कुछ मानसिक व आध्यात्मिक रूप से। एक व्यक्ति, जो अपनी (शारीरिक) आँखों से देख नहीं सकता, उसके लिए यह सारा संसार अन्धकारमय है और वह किसी भी वस्तु/व्यक्ति की सुन्दरता, उसके रंग और निखार को न तो देख सकता और न ही उसकी सुन्दरता की किसी से तुलना कर सकता है। उसी प्रकार **आध्यात्मिक द ष्टिकोण** से भी व्यक्ति अन्धा हो सकता है जब वह ईश्वर और उसकी आज्ञाओं से दूर है, प्रभु येशु (ईश्वर के इकलौते पुत्र) से अनभिज्ञ और पाप में फँसा हुआ है। ऐसा व्यक्ति ईश्वर को (स्वर्गिक वस्तुओं, निवासियों व मनुष्यों को) नहीं देख पायेगा, न उसकी उपस्थिति का अनुभव कर पायेगा, न उसकी पद्धति व मार्ग को समझ पायेगा। वह उसके मार्गदर्शन से वंचित हो कर अन्धकार में ही भटकता रहेगा। पर प्रभु येशु पर विश्वास करने वाला व उसका अनुसरण करने वाला अन्धकार से ज्योति में आ जाता है व स्वंय अंधेरे में रहने वालों के लिए ज्योति (मोमबत्ती, दीपक या मशाल इत्यादि) बन जाता है। क्योंकि प्रभु येशु कहते हैं, ***"संसार की ज्योति मैं हूँ। जो मेरा अनुसरण करता है, वह अन्धकार में भटकता नहीं रहेगा। उसे जीवन की ज्योति प्राप्त होगी।"*** (योहन 8:12;12:46) और यह भी कि, ***"तुम संसार की ज्योति हो।... तुम्हारी ज्योति मनुष्यों के सामने चमकती रहे, जिससे वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे स्वर्गिक पिता की महिमा करें।"*** (मत्ती 5:14-16) हमारी आँख जिस प्रकार की होगी उसी प्रकार हमारा

शेष भाग प ष्ठ 3 पर

आध्यात्मिक शक्ति बढ़ाती पवित्र जपमाला की भक्ति!

*पवित्र माला का जपना माँ की ममता, आश्रय व मध्यस्थता का अनुभव दिलाती है। पवित्र माला एक तरफ एक गूढ़ एवं अर्थपूर्ण प्रार्थना का रुप है और दूसरी तरफ एक सरल व व्यवहार में लाने योग्य सुन्दर प्रार्थना है जिसमें हमारे मुक्ति इतिहास का सारांश छिपा है। रोज़री या पवित्र जपमाला एक सरल प्रार्थना है जिसे कोई भी, कभी भी, कहीं भी कर सकता है। पर इसमें एक व्यक्ति पूर्ण रुप से खुद को शामिल कर लेता है–उँगलियाँ माला के मोतियों पर दौड़ती है, होंठों से प्रार्थनाँए निकलती हैं, दिमाग प्रत्येक भेद पर मनन करता है तथा हृदय उस रहस्य के द्वारा मिलने वाले संदेश का प्रत्युत्तर देता है। जपमाला आव त्तियों से युक्त है, जो प्रेम की भाषा का एक महत्त्वपूर्ण तत्व है। **"प्रणाम मरिया", "हे पिता हमारे", "पवित्र त्रित्व की स्तुति", "प्रेरितों का धर्मसार", "येशु से विनती", "प्रणाम रानी"** इत्यादि प्रार्थनाओं से गूँधी यह माला भक्तिभाव से करने पर ऊपर स्वर्ग तक माँ मरियम के हाथों में पहुँच जाती है जो हमारे निवेदनों को प्रभु येशु तक पहुँचा देती है।*

अक्टूबर का महीना जपमाला की रानी माँ मरियम को समर्पित है। मुख्य पर्व अक्टूबर 7 को मनाया जाता है जहाँ कलीसिया इस विश्वास का बखान करती है कि माँ मरियम कलीसिया की माँ और संरक्षिका है। पहले इस दिन को माँ मरियम- विजयी की रानी के रूप में मनाया जाता था।

*पोप जॉन तेईसवें ने कहा था, "यह पवित्र जपमाला सभी पुरोहितों व धर्मभाई–बहनों के दैनिक प्रार्थना का अंश बन जाये। उसी तरह प्रत्येक ख्रीस्तीय परिवार को पवित्र जपमाला को अपने जीवन का अभिन्न साथी बना लेना चाहिए।" यह प्रार्थना शान्ति, आश्वासन, धैर्य, सहनशक्ति, पवित्रता, विनम्रता, आज्ञाकारिता, प्रेम, आशा, विश्वास, इत्यादि गुणों को जाग त करता है। यह बात आजमाई हुई है कि कैसे पवित्र माला प्रतिदिन करने से आप को प्रलोभनों पर, बुराई पर विजय प्राप्त होती है क्योंकि आपकी **आध्यात्मिक शक्ति** जपमाला करने से बढ़ जाती है तथा आपको पवित्र माँ मरियम की मध्यस्थता व उनकी छत्रछाया का संरक्षण प्राप्त हो जाता है। शैतान को पैरों तले कुचलने वाली माँ को लाखों बार धन्यवाद जो हमें शैतान के हर षड्यंत्र व जाल से छुडा लेती*

*है और हम बच्चों को स्वर्ग की ओर ऊपर उठाने के लिए अपना हाथ बढ़ाती है। जपमाला में चार प्रकार के भेदों पर, अर्थात् **आनन्द के भेद, प्रकाश के भेद, दुःख के भेद एवं महिमा के भेद पर,** मनन कर हम प्रभु येशु के जीवन के हर पहलू पर अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं और उसे अपना आदर्श मान लेते हैं। प्रभु के जीवन पर श्रद्धापूर्वक मनन करना उनकी आराधना करने-जैसा है और उनकी आराधना करने पर हमारे अन्दर उनके सदगुण आ जाते हैं व हमारा जीवन धीरे-धीरे पवित्रता व परिपूर्णता की ओर,*

शेष भाग प ष्ठ 2 पर ★

येशु ने कहा, "जो बुराई करता है, वह ज्योति से बैर करता है और ज्योति के पास इसलिए नहीं आता कि कहीं उसके कर्म प्रकट न हो जायें। किन्तु जो सत्य पर चलता है, वह ज्योति के पास आता है, जिससे यह प्रकट हो कि उसके कर्म ईश्वर की प्रेरणा से हुए हैं।"(सन्त योहन 3:20-21)

पृष्ठ 1 का शेष भाग ★

बढ़ता जाता है। अंततः हम पवित्र आत्मा से परिपूर्ण परमेश्वर की प्रिय सन्तान बन जाते हैं। इस पवित्र जपमाला की रानी के पर्व के महीने में हर रोज़ जीवन-धाम सैक्टर-22,फरीदाबाद में प्रतिवर्ष सांय 6 बजे विशेष जपमाला की जाती है, जो प्रतिदिन अलग-अलग उद्देश्यों व लोगों के लिए समर्पित है (जिसे स्वंय प्रभु दर्शन द्वारा समझाते हैं), उसके अनुरुप पवित्र बाईबिल से वचन भी प्रभु हमें बताते हैं, तथा विभिन्न संदेश व चंगाईयाँ भी प्राप्त होती हैं जिनमें सामान्य चंगाईयाँ हैः सिर, पैर, घुटने, हाथ, पेट, पीठ व कमर में दर्द इत्यादि से मुक्ति। इस महीने हुई पवित्र जपमाला के प्रतिदिन समर्पित उद्देश्यों, वचनों तथा मुख्य संदेशों व दर्शनों का यहाँ निम्नलिखित सूचि में उल्लेख किया गया है।

तारीख, दिन	माला समर्पण का उद्देश्य	वचन	दर्शन, प्रमुख संदेश व आशीष
1, बुधवार	सभी विश्वासी जन के लिए कि वे सभी सांसारिक वासनाओं का दमन करते हुए ईश्वर के वचन पर विश्वास कर उसका अनुगमन करें।	योहन 8:31-36	स्वर्गदूत- माँ मरियम के साथ नीचे की ओर देखते हुए/बातें कर रहे/जीवन-धाम के पेड़ के नीचे खड़े, बच्चे का वरदान, द ढ़ बनो, आशीष- जिसका विशेष दिन है, शान्ति।
2, वीरवार	सभी अंधकार और अन्धविश्वास में दबे हुए लोगों के लिए जो सच्चे ईश्वर, सच्ची ज्योति से अनभिज्ञ हैं।	प्रेरित-चरित 17:24-31	व द्ध पुरूष हाथ में कमण्डल लिए, बाईबिल, कुँआ, घड़ा तेढ़ा कर रहे, ध्यान करो, दीपक हाथों में, आग, फूलों की वर्षा।
3, शुक्रवार	सभी हत्यारों के लिए विशेषतः भ्रूण हत्या करने वालों, करवाने वालों व उनका समर्थन देने वालों के लिए कि वे इस घोर पाप की गम्भीरता को पहचानें।	1 कुरिन्थि. 6:9-11	म त शिशुओं की आत्माँए न्याय के लिए पुकार रहीं, माँ आँसू बहा रही, प्रकाश-बाईबिल से व प्रभु के दिल से, एक दिल में लिखा–'चंगाई मिली', पवित्र आत्मा की वर्षा।
4, शनिवार	सभी व्यभिचार और वेश्याव त्ति में, बुरी संगति में फँसे हुए लोगों के लिए कि वे पाप से दूर रहें व पश्चाताप करें।	एफेसियों 5:29-33	युवक-युवतियाँ नाच-गा रहे क्लबों व होटलों में, जिस्म का व्यापार हो रहा, येशु सफेद कपड़ों में, प्रभु की आँख देख रही।
5, रविवार	सारे संसार में सच्ची शान्ति बहाल होने के लिए, जो केवल प्रभु येशु से ही प्राप्त हो सकती है, ।	उपदेशक 3:16-22	अनेक लोग ईश्वर से दूर पापमय जीवन बिता रहे व मूर्तिपूजा कर रहे, जागते रहो और प्रार्थना करते रहो, हाथ में ज्योति।
6, सोमवार	शारीरिक या मानसिक रूप से अन्धे लोगों के लिए विशेषतः जन्मान्धों के लिए व जो आँखों की अनेक बीमारियों से पीड़ित हैं, जो सच्चाई को देख नहीं पाते।	मत्ती 6:22-23	आशीष- जिसका विशेष दिन है, शान्ति, जागते रहो, हाथ में टोकरी, ज्योति, गुलाब के फूल, प्रभु से प्रकाश आ रहा, चमकते सितारे।
7, मंगलवार	बेघर, भूखे-नंगे व बेसहारा लोगों के लिए जो फुटपाथ पर, झुग्गी-झोपड़ियों, जंगलों में रहते हैं, व जिनकी दैनिक आवश्यकताँए पूरी नहीं होतीं।	1 पेत्रुस 3:8-11	छोटे येशु माँ मरियम के साथ, प्रभु का हृदय, माला विनती करो, बाईबिल, आशीष- एक बच्चे को, शान्ति, वरदान-बच्चे का, नया घर मिलने का, टूटी-फूटी झोपड़ियाँ, बुखार उतरा।
8, बुधवार	सभी मूर्तिपूजकों के लिए, जो अन्धकार व निराशा में हैं और अपने जीवन में सच्ची शान्ति से वंचित हैं।	फिलिप्पियों 2:1-11	कोई कागज़ पर लिख रहा, एक जगह में लोग अन्धे हो रहे, रावण के पुतले का हाथ जल कर गिर रहा, उड़ीसा, भीड़ में भगदड़।
9, वीरवार	सभी ख्रीस्तीयों के लिए, जो ईश्वर में अपना विश्वास खो बैठे हैं, कलीसिया से अलग हो गये हैं।	योहन 17:1-12	आशीष सभी को, दुर्घटना से बचाव, वरदान-नौकरी व बच्चे का, रोज़ मिस्सा में भाग लो, दिल्ली के लिए प्रार्थना करो, द ढ़ रहो।
10, शुक्रवार	जीवन-धाम में आने वालों के विश्वास में व द्वि व परिपक्वता के लिए, कि वे वचन सुनकर उनका पालन करने में सक्षम हों, तथा सभी पापों से मुक्त हों।	1 तिमथी 1:12-20	कुछ लोग जीवन-धाम के पेड़ के नीचे बैठे और कुछ पेड़ से बाहर, बाईबिल पढ़ो, आशीष-एक घर का, दो व्यक्तियों का विश्वास द ढ़ हो रहा, माँ मरियम सिंहासन पर बैठी, माला विनती से प्रकाश।
11, शनिवार	सभी बच्चों के लिए विशेषकर जो अनाथ हैं या माता-पिताओं से दूर हैं, जिन्हें सही मार्गदर्शन व सहायता नहीं मिल रही।	स्तोत्र 78:1-8	बहुत बच्चे भटक रहे, कुमार्ग पर चल रहे जो अपने माता-पिता से दूर हैं, प्रकाश-बाईबिल से, प्रभु का हाथ, पवित्र आत्मा।
12, रविवार	कलीसिया के सभी चुने हुए अभिषिक्तों, धर्म - प्रचारकों, धर्मसमाजों व सहयोगियों के लिए।	प्रकाशना 20:1-8	अनेक पुरोहित और धर्मबहनें प्रार्थना कर रहे, प्रभु मिस्सा चढ़ा रहे, स्कूल के बच्चे, सन्त योसेफ, स्वर्ग की ओर सीढ़ी।
13,सोमवार	सभी निस्सन्तान दम्पत्तियों के लिए जो जीवन-धाम में विश्वास के साथ एक बच्चे का वरदान माँगते हैं।	स्तोत्र 127	बच्चे, माँ से प्रार्थना करो, आशीष-जुड़वें बच्चों के माता-पिता को, जीवन-धाम से निस्सन्तान दम्पत्तियों को सन्तान का वरदान।
14,मंगलवार	सभी बिखरे व टूटे परिवारों के लिए, अलग-अलग रहने वाले दम्पत्तियों के बीच समझौते के लिए।	एफेसियों 5:21-32	पारिवारिक प्रार्थना,पैशाचिक बन्धन व मूर्तिपूजा अनेक परिवारों के फूट का कारण, छतरी, प्रेम घटता जा रहा, आशीष-एक बच्चे को।
15, बुधवार	सभी राजनैतिक नेताओं, मंत्रियों, अधिकारियों के लिए, व भारत सरकार के लिए।	रोमियों 13	प्रार्थना-चमत्कार के लिए, छतरी, नेतागण, चिन्ता मत करो, आशीष, बड़ा प्याला, रोटी हृदय के समान, आग स्वर्ग तक जा रही।
16, वीरवार	सभी चर्मरोगियों के लिए,विशेषकर कुष्ट रोग, सफेद दाग, एलर्जी, एक्ज़ीमा से पीड़ित लोगों के लिए।	मारकुस 1:40-45	बहुत-से कोढ़ी- बैठ कर रो रहे, जीवन-धाम से चंगे हो गये, मुकुट, 'नया जीवन' की किताब, आशीष- बच्चे को, वरदान-सन्तान का।
17, शुक्रवार	बहरे, गूँगे, विकलाँग, पोलियो-ग्रसित और लाचार लोगों के लिए।	लूकस 6:43-45	जीवन-धाम में आये बहरे-गूँगे बच्चों को चंगाई, कान व मुँह में तकलीफ वालों को आशीष, शान्ति, प्रभु की स्तुति करो।
18, शनिवार	उनके लिए जो माँ मरियम के विरूद्ध बोलते हैं, उनपर श्रद्धा नहीं रखते, उन्हें नहीं जानते, पवित्र जपमाला नहीं करते।	स्तोत्र 87	जपमाला के प्रति भक्ति बढ़ती जा रही, जपमाला द्वारा आशीष माँगें, जागते रहो, प्रभु को धन्यवाद दें जपमाला सीखने के लिए।
19, रविवार	व द्ध माता-पिताओं के लिए, विशेषकर जो बीमार हैं, बिस्तर पर हैं, अकेले हैं, परित्यक्त व निराश हैं।	एफेसियों 6:1-4	बिस्तर पर पड़े अनेक व द्ध माता-पिताओं को आशीष, बाइबिल पढ़ो, झरना, वेदी पर आग, आगे बढ़ो, फूलों की वर्षा, शान्ति दी,स्वर्गदूत।

20, सोमवार	सभी पैशाचिक बन्धनों में जकड़े हुए लोगों के लिए व जिन्हें मिर्गी के दौरे पड़ते हैं।	**लूकस 11:14-23**	हज़ारों परिवारों को प्रभु ने पैशाचिक बन्धनों से मुक्ति दी, शान्ति दी, सिर्फ 'मेरी भेड़ें ही मेरी आवाज़ सुनेंगी', फूलों की वर्षा, बाइबिल।
21, मंगलवार	सभी नवयुवकों व युवतियों के लिए कि वह पवित्रता व आज्ञाकारिता, प्रार्थना व ईश वचन में आगे बढ़ें, तथा दूसरों के लिए आदर्श बनें।	**याकूब 4:4-10**	आशीष-बुखार में पड़े व्यक्ति को, चलने में लाचार को, म त प्रियजन की फोटो पर माला चढ़ा कर पूजा मत करो, झरना, शराब की बोतल, प्रार्थना करो- बिगड़े बच्चों के लिए, खांसी का ध्यान करो।
22, बुधवार	नशीली पदार्थों का सेवन करने वालों के लिए, ऐसी वस्तुओं का उत्पादन/वितरण करने वालों के लिए।	**एफेसियों 5:14-20**	अनेकों को नशेबाजी से मुक्ति मिली, जागते रहो, शान्ति, आशीष- पोलियो ग्रसित व्यक्ति को, म तक आत्मा को, माँगो-मिलेगा, फूल।
23, वीरवार	जीवन-धाम के परिवार, सभी प्रेषितों व उनके परिवारों के लिए कि उन्हें ईश्वरीय संरक्षण व आशीष प्राप्त हो।	**2 तिमथी 2:1-13**	वरदान-नये घर व नौकरी का, आशीष-बीमार बच्चे को, अनेक लोग बड़े क्रूस ढ़ो रहे, रात्रि में आराधना करने वालों के लिए प्रार्थना।
24, शुक्रवार	गरीबों के लिए, दलितों, पिछड़े व शोषित वर्ग के लोगों के लिए।	**याकूब 1:9-11**	चिन्ता मत करो, चुने हुए लोगों में गरीब हैं जो स्वर्ग पहुँच रहे हैं, छोटी झोंपड़ियों में प्रकाश और बड़े घरों में अन्दर अँधेरा, झूला, फूल।
25, शनिवार	कैन्सर, एड्स, टी.बी. और अन्य जानलेवा बीमारियों से पीड़ित व्यक्तियों के लिए।	**इब्रानियों 12:4-8**	विश्वास करो, दुःख तकलीफ में द ढ़ रहो, माँ मरियम प्रार्थना कर रही, जानलेवा रोग से चंगाई अनेकों को, प्रार्थना-रोगियों के लिए।
26, रविवार	सभी अस्पतालों, नर्सिंग होम व स्वास्थ्य केन्द्रों के लिए व उनमें काम करने वाले सभी डॉक्टरों, नर्सों व कर्मचारियों के लिए।	**प्रवक्ता 38:1-15**	आशीष- पोलियो ग्रसित व्यक्ति को, सालगिरह मनाने वाली दम्पत्ति को(एक माला के अन्दर), बच्चे को पढ़ाई में, मोमबत्तियाँ, फूलों की वर्षा, आगे बढ़ो, स्वर्ग से सीढ़ियाँ, सितारे, छतरी, कबूतर।
27, सोमवार	सभी बेरोज़गारों के लिए, तथा सभी बन्द दुकानों, कारखानों व संस्थाओं के खुलने के लिए।	**गलातियों 6:1-10**	आशीष- एक संस्था को, सम्पत्ति का सही उपयोग करने के लिए ज्ञान-विवेचन, अच्छी नौकरी की, चर्म रोग से पीड़ित को, पेड़, फूल।
28, मंगलवार	पवित्र आत्मा से अनभिज्ञों के लिए, उनकी उपस्थिति, शक्ति व महत्व को न जानने वालों के लिए।	**योहन 14:15-21**	अधिकतर लोग पवित्र आत्मा से अनभिज्ञ, येशु पर भरोसा रखो व उसकी आराधना करो, जपमाला करो, एक फोन के पीछे चिन्तित।
29, बुधवार	सभी आतंकवादियों, मुजरिमों, कैदियों की मुक्ति व मन-परिवर्तन के लिए, पाप की दासता से मुक्ति के लिए, उन्हें आशीष मिले।	**2 तिमथी 3:1-5**	चन्ता मत करो, द ढ़ रहो, आशीष-एक बच्चे को, विवाह के सम्बन्ध में, ईश्वर की वाणी सुनने का वरदान, शान्ति के पथ पर सभी अग्रसर हों, कई लोगों ने कुमार्ग छोड दिया।
30, वीरवार	सभी अधोलोक में पड़े म तक आत्माओं की पापमुक्ति के लिए जिन्हें दूसरों की प्रार्थनाओं की ज़रूरत है।	**1 कुरिन्थि. 15:12-19**	म तक आत्माओं की मुक्ति के लिए अनेक स्वर्गदूत और सन्त हमारे साथ प्रार्थना कर रहे, आत्माओं की भीड़ जीवन-धाम के द्वार पर।
31, शुक्रवार	सभी बुराईयों, अन्धकारमयी शक्तियों व खतरों से जीवन-धाम के संरक्षण के लिए।	**प्रकाशना 7:9-17**	कबूतर चारों ओर कमरे में प्रभु और माँ मरियम छोड़ रहे– पवित्र आत्मा का स्पर्श/दर्शन अनेकों को, स्वर्गदूत नाच रहे, सन्त एन्थोनी और सन्त मिखाएल से प्रार्थना करें, फूलों की वर्षा।

प ष्ठ 1 का शेष भाग द ष्टिकोण, हमारी ज्योति तथा हमारा जीवन भी होगा।

बीमार आँख के लक्षण, आध्यात्मिक अँधेपन के मूल कारण

जो दुर्गुण हमारी **आध्यात्मिक द ष्टि** को विकृत कर सकते या हमें अन्धा बना सकते हैं, वे इस प्रकार हैं– **पक्षपात**(जो हमारे निर्णय-शक्ति व अभिप्राय को नष्ट कर सकता है), **ईर्ष्या** (जो सत्य को अँधेरे में रखता और जिससे कई रिश्ते-नाते टूट जाते, परिवार बिखर जाते व दुश्मनी पैदा हो जाती है), **अहंकार** (जिससे हम अपनी कमियों व कमज़ोरियों को देख नहीं पाते, अपनी व दूसरों की वास्तविकता को समझ नहीं पाते और कभी स्वयं में सुधार नहीं ला पाते हैं), **लालच और व्यभिचार** (जिससे हम दूसरों की ज़रूरतों व उनके प्रति सम्मान तथा आत्मसम्मान को देख नहीं पाते और उस अन्धेपन में अपनी आत्मा व शरीर के विरूद्ध पाप कर बैठते हैं), **द्वेष और कंजूसी** – दूसरों का न्याय करने में, उनसे बोलने में, उनके प्रति कर्तव्यों व अपने कार्यों में (जिससे हम कभी सन्तुष्ट नहीं रह पाते, हमारी खुशी और शान्ति छिन जाती है और हम एक-दूसरे की सहायता या मदद के लिए खुद को रोक देते हैं। अपने में ही घुट कर रहते हुए न हम खुद को स्वीकार कर पाते, न तो हम दूसरों के साथ और न ही हम ईश्वर के साथ रह पाते या कोई समझौता ही कर पाते हैं)। इसलिए प्रभु येशु चाहते हैं कि हम अपने दीपक को पूर्ण रूप से खुला व साफ रखें; भले कार्यों को करते हुए सदा उनकी ज्योति में चलें; उसी तरह **दयालु, उदार, प्रेमी व भेद-भाव रहित, पवित्र व परिपूर्ण** बनें जिस प्रकार पिता परमेश्वर हैं ताकि हम उनके द ष्टिकोण से संसार को देखें व ईश्वर के दर्शन कर लें। हम ईश्वर से सदा संयुक्त रहें- इस लोक में तथा परलोक में। हम पवित्र आत्मा प्राप्त कर छोटे बालकों-जैसे बन जायें [***"क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन-जैसे लोगों का है।"*****(मत्ती 19:14)**] जिससे हम स्वर्ग में प्रवेश पा सकें। स्वर्ग में पहुँच कर हम सभी ईश्वर को, जो अगम्य ज्योति में निवास करता है, वैसे ही देखेंगे जैसे वह वास्तव में है। ◉

प्रभु ने मेरी द ष्टि वापिस लौटाई!

प्रभु येशु की स्तुति हो ! प्रभु येशु को धन्यवाद!

मैं, शिशुपाल कुमार(उम्र-13वर्ष), यहाँ "जीवन-धाम" की प्रार्थना सभा में आज दूसरी बार आ रहा हूँ। पर मेरी मम्मी यहाँ पर पहले से ही प्रार्थना में शामिल हो रही है। मेरी बायें आँख की पलक जन्म से ही आधी खुलती थी जिसका कारण डॉक्टर ने मेरे मस्तिष्क के एक नस की कमज़ोरी बताई थी। चार दिन पहले अचानक मेरी बायीं आँख में दर्द शुरु हुआ और फिर मेरी आँख के आगे अन्धेरा छा गया। डॉक्टर को दिखाने पर पता चला कि मेरी आँख की रोशनी पीछे से ही चली गई है और फिर मैं दोबारा कभी नहीं देख पाऊँगा। मेरी मम्मी यह सुनकर व मेरे भविष्य के विषय में सोचकर फूट-फूट कर रोने लगी। आज इतवार को वह मुझे यहाँ जीवन-धाम ले आई। प्रार्थना के बाद प्रवचन देने वाली बहनजी ने मेरी आँखों पर हाथ रख कर प्रभु येशु से प्रार्थना की और सबने स्तुति की। इसके बाद जब मैंने आँखें खोलीं तो पता चला कि प्रभु येशु ने अपनी दया से मेरी द ष्टि मुझे वापिस लौटा दी है। उन्होंने मुझे नया जीवन दिया और अपना साक्षी बना दिया है। आल्लेलूया!

"उसने अपनी वाणी भेजकर उन्हें स्वस्थ किया"। **शिशुपाल**, फरीदाबाद

येशु ने कहा, "जब तक ज्योति तुम्हारे पास है, आगे बढ़ते रहो। कहीं ऐसा न हो कि अन्धकार तुम को घेर ले। ...जब तक ज्योति तुम्हारे पास है, ज्योति में विश्वास करो, जिससे तुम ज्योति की सन्तति बन जाओ।"(सन्त योहन 12:35-36)

इन निःसंतान दंपतियों को प्रभु ने आशीष दी, सन्तान का दान देकर उनके परिवार को अनुग्रहित किया! आल्लेलूया!

प्रभु येशु कहते हैं, "माँगो और तुम्हें दिया जायेगा; ढूँढो और तुम्हें मिल जायेगा; खटखटाओ और तुम्हारे लिए खोला जायेगा। क्योंकि जो माँगता है, उसे दिया जाता है; जो ढूँढता है, उसे मिल जाता है; और जो खटखटाता है, उसके लिए खोला जाता है।"(सन्त लूकस 11:9-10)

मिस्सा बलिदान का समय:

मकान न०.696/सैक्टर-22 फरीदाबाद में

हर इतवार - शाम 6:30 बजे प्रतिदिन - प्रातः 10:30 बजे मिस्सा बलिदान चढ़ाया जाता है। मंगलवार को मिस्सा प्रातः 6:30 बजे चढ़ाया जाता है। पिछले 5 सालों से लगातार 24 घण्टों की पवित्र आराधना यहाँ चलती आ रही है। आप भी हमारे साथ प्रार्थना में शामिल हो सकते हैं।

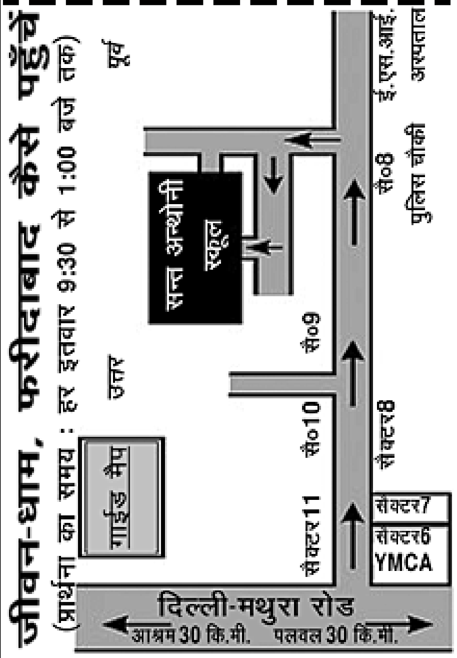

★ बाईबिल प्रतियोगिता ★

10) कुरिन्थियों के नाम पहला पत्र
a) अध्याय 1-3

सन्त पौलुस ने कुरिन्थ की कलीसिया को उनके मार्गदर्शन व आध्यात्मिक विकास के लिए करीब 57 इसवीं में पत्र लिखे थे जिसमें से पहले पत्र के पहले तीन अध्यायों **(अध्याय 1-3)** से लिये गये इन निम्नलिखित वाक्यों में आपने रिक्त स्थान भरने हैं तथा उत्तर में उनकी वाक्यांश संख्या भी अध्याय सहित बतलानी है।

1) यदि कोई ______का ______नष्ट करेगा, तो______उसे _____करेगा; क्योंकि ______का ______पवित्र है और वह मन्दिर _____लोग हैं।

2) ______ने ______को हमारा ज्ञान, ________, पवित्रता और ______बना दिया है।

3) हम______के_______हैं और _____लोग हैं– ______की ______, ईश्वर का______ ।

4) ईश्वर को धन्यवाद कि मैंने _______और ________को छोड़कर _____लोगों में किसी को ________नहीं दिया!

5) वास्तव में ____आप ______के बीच रहते ______दुर्बल, _______और ______था।

6) चाहे_____पौलुस,_______अथवा_____हो, __________हो, जीवन अथवा ________हो, ________अथवा भविष्य हो– वह सब _________है।

7) हम इन ________की ________करते समय _________प्रज्ञा के _______का नहीं, बल्कि _______द्वारा प्रदत्त ________का प्रयोग करते हैं।

8) यहूदी ________माँगते और ________ज्ञान चाहते हैं, किन्तु हम ______पर आरोपित ________का _______करते हैं।

पिछली प्रतियोगिता के सही उत्तर

9) रोमियों के नाम पत्र
e) अध्याय 14-16

1) फिलोलोगुस, युलिया, ओलुम्पास, सन्तों, नमस्कार।(16:15)

2) मसीह, मर, जी, म तकों, जीवितों, प्रभु।(14:9)

3) येस्से, वंशज, ग़ैर-यहूदियों, शासन, यहूदी, भरोसा।(15:12)

4) आज्ञाकारिता, चरचा, आनन्द, विषय।(16:19)

5) ईश्वर, पीने, न्याय, आत्मा, आनन्द, विषय।(14:17)

6) सम्बन्धियों, बन्दीग ह, अन्द्रोनिकुस, युनियास, नमस्कार।(16:7)

7) विश्वास, दुर्बल, पापशंकाओं, विवाद, स्वागत।(14:1)

8) येरूसालेम, कलीसिया, दरिद्रों, मकेदूनिया, अख़ैया, चन्दा, निश्चय।(15:25-26)

प्रतियोगिता के नियम

क) प्रतियोगिता के उत्तर अगले महीने के 20 तारीख तक हमारे पास पहुँच जाने चाहिएँ। उत्तर एक पोस्ट कार्ड या चिट्ठी में इस पते पर लिख भेजिए – **जीवन-धाम, मकान नं० 696, सैक्टर-22, फरीदाबाद-121005, हरियाणा।**

ख) अपना नाम व पता स्पष्ट शब्दों में लिखिए। प्रतियोगिता की संख्या एवं शीर्षक लिखना ज़रुरी है। सभी उत्तर(प्रश्न संख्या सति) क्रमानुसार होने चाहिएँ।

ग) इनाम सिर्फ उन प्रतियोगियों को मिलेगा जो लगातार तीन प्रतियोगिताओं के सही–सही उत्तर समय पर देंगे।

घ) प्रतियोगिता के सही उत्तर अगले माह के प्रकाशन में बताये जायेंगे।

ङ) सहीं उत्तरों से मिलाने के लिए अपने उत्तरों की एक प्रति अपने पास भी रखें।

Visit our website:
www.jeevandham.org
E-mail : justcallanthony@yahoo.com

क्या आप चिन्तित...........हैं ?
क्या आप दुःखी...........हैं ?
क्या आप रोगी...........हैं ?
क्या आप के मन में अशान्ति...........है ?

आपको सान्त्वना देने के लिए एक जगह है। वह है 'जीवन-धाम'। आप सन्त अन्थोनी स्कूल, सैक्टर-9 फरीदाबाद में हर रविवार प्रातः 9:30 बजे से 1:00 बजे तक 'जीवन-धाम' फरीदाबाद द्वारा आयोजित प्रार्थना सभा में भाग लेकर प्रभु येशु के अनुग्रहों को प्राप्त कर सकते हैं।

येशु कहते हैं, "देखो, मैं शीघ्र ही आऊँगा। मेरा पुरस्कार मेरे पास है और मैं प्रत्येक मनुष्य को उसके कर्मों का प्रतिफल दूँगा। मैं आल्फा और ओमेगा हूँ, प्रथम और अन्तिम, आदि और अन्त।"(प्रकाशना 22:12-13)

Edited & Published by Anthony, JEEVAN DHAM, 696/Sec-22, Faridabad. Printed at Sabina Printing Press, 387/24, Faridabad, Haryana.